स्वधन

मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद वांग्मय से एक संकलन

Version 1

१७ अक्टूबर २०१९

श्रद्धेय श्री ए. नागराज जी द्वारा प्रणेत मध्यस्थ दर्शन (सह अस्तित्ववाद) में से शब्दों के संदर्भों के खोजने के क्रम में यह "स्वधन" शब्द के संदर्भों का संकलन है। यदि यहाँ लिखे हुए और मध्यस्थ दर्शन के मूल वाङ्गमय में कोई अंतर मिले तो मूल वाङ्गमय को ही सही माना जाए। यहाँ लिखे हुए में त्रुटियों के सुधार और इसको और उपयोगी बनाने हेतु भागीदारी करने के लिए रोशनी साहू (sahuroshani@gmail.com) से संपर्क करें।

Version 0.1	Draft version created	Roshani Sahu, 17/10/2019

स्वधन

परिभाषा: प्रतिफल, पारितोष, पुरस्कार रूप में प्राप्त धन।

(परिभाषा संहिता, संस्करण : तृतीय 2012 मुद्रण: 14 जनवरी 2016, पृ: 213)

अनुक्रमणिका

स्वास्थ्य और इससे संबन्धित शब्द को लेकर मध्यस्थ दर्शन वांग्मय में आये सन्दर्भों को निम्न क्रम से संकलित किया गया है.

1. मानव व्यवहार दर्शन ३
2. मानव कर्म दर्शन ५
3. मानव अभ्यास दर्शन ५
4. मानव अनुभव दर्शन ५
5. समाधानात्मक भौतिकवाद ६
6. व्यवहारात्मक जनवाद ९
7. अनुभवात्मक अध्यात्मवाद ११
8. व्यवहारवादी समाजशास्त्र १3
9. आवर्तनशील अर्थशास्त्र २०
10. मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान २२
11. मानवीय संविधान सूत्र व्याख्या २४
12. जीवन विद्या – एक परिचय २८
13. विकल्प एवं अध्ययन बिन्दु २९
14. मानवीय आचरण सूत्र ३०
15. संवाद – भाग १ ३१
16. संवाद – भाग २ ३२

संदर्भ: मानव व्यवहार दर्शन

(संस्करण: 2011, मुद्रण: 2015)

- परधन, परनारी/परपुरुष, परपीड़ा से मुक्त व्यवहार तथा **स्वधन**, स्वनारी/स्वपुरुष तथा दया पूर्ण कार्य–व्यवहार में जो निष्ठा है यही समस्त व्यवहार एक से अनंत तक न्याय पूर्ण व्यवहार है। **(अध्याय: 5, पृष्ठ नंबर: 47)**
- असंग्रह: – व्यय के लिए की गई आय की असंग्रह संज्ञा है तथा इसका सद्व्यय अनिवार्य है। यह **स्वधन** विधि से सार्थक है। **(अध्याय:10, पृष्ठ नंबर:74)**
- असंग्रह समाधान–समृद्धि, स्नेह, विद्या, निराभिमानता (सरलता), अभय, एवं वाणी संयम से युक्त विचार से वैचारिक स्वर्गीयता की, स्वनारी/स्वपुरुष तथा **स्वधन** एवं दया पूर्ण व्यवहार से व्यवहारिक सुख अथवा व्यवहारिक स्वर्गीयता की उपलब्धियां हैं।
  - इसके विपरीत संग्रह, द्वेष, अविद्या, अभिमान (दिखावा), भय तथा वाणी की असंयमता से युक्त विचार से वैचारिक नारकीयता का तथा परनारी/परपुरुष, परधन एवं परपीड़ा रत कार्य एवं व्यवहार से व्यवहारिक क्लेशों से पीड़ित होना होता है। **(अध्याय:11, पृष्ठ नंबर:78–79)**
- जागृति–विधि से अंतर्राष्ट्रीय नीति में अखंडता व सार्वभौमता की नीति, राष्ट्रीय नीति में विधि (न्याय) की अक्षुण्णता बनाए रखने के लिए व्यवस्था, सामाजिक नीति में **स्वधन**, स्वनारी/स्वपुरुष, तथा दया पूर्ण कार्य–व्यवहार की नीति और व्यक्तिगत जीवन में समझदारी संपन्न नीति से ही पोषण संभव है।
  - संबंध एवं संपर्क के विषय में एक बात स्पष्ट कर देना आवश्यक है। इन दोनों में दायित्व का निर्वाह आदान–प्रदान के आधार पर होता है परंतु दोनों में भेद यह है कि संबंध की परस्परता में प्रत्याशाएँ पूर्व निश्चित रहती है तथा इसके अनुरूप ही आदान–प्रदान होता है। संपर्क में आदान एवं प्रदान परस्परता में पूर्व निश्चित नहीं रहता। इसीलिए संपर्क में आदान–प्रदान क्रियाएं ऐच्छिक रूप में अवस्थित है। संबंध दायित्व प्रधान एवं संपर्क कर्तव्य प्रधान है। **संपर्क में परस्परता में स्वधन, स्वनारी/ स्वपुरुष दयापूर्ण कार्य व्यवहार की अपेक्षा रहती है।** मानव अथवा इससे विकसित तक ही संबंध है जबकि समस्त इकाइयाँ परस्पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष संपर्क में है ही। **(अध्याय:16, पृष्ठ नंबर:116)**

सामाजिक क्षेत्र

	विधि (जागृत मानव प्रवृत्ति)	निषेध (भ्रमित मानव प्रवृत्ति)
1	**स्वधन – प्रतिफल, पारितोष, पुरस्कार सम्पन्नता का प्रमाण**	परधन (शोषण एवं पाखण्ड पूर्वक प्राप्त धन)
2	स्व–नारी या स्व–पुरुष, दयापूर्ण कार्य–व्यवहार (सामाजिक निर्णय अनुसार प्रमाण)	पर–नारी या पर–पुरुष (सामाजिक निर्णय के प्रतिकूल)
3	दयापूर्ण कार्य व्यवहार (जीने देना) पात्रता के अनुसार वस्तु सुलभता का प्रमाण	पर–पीड़ा (दूसरों के जीवन में हस्तक्षेप)

(अध्याय:16 (**ii**), पृष्ठ नंबर:133)

- आर्थिक सुरक्षा: – राष्ट्रीय अर्थ सुरक्षा का नीति निर्धारण निम्न बिंदुओं के आधार पर किया जाना चाहिए: –
    1. व्यवस्था द्वारा सभी व्यक्तियों में उनकी क्षमता, पात्रता एवं योग्यता के आधार पर उत्पादन–कार्य में प्रवृत्त होने वाली नीति का विकास। इसका स्पष्ट स्वरूप परिवार की आवश्यकता से अधिक उत्पादन से है एवं समाधान–समृद्धि हर परिवार में प्रमाणित होने से है।
    2. परिवार समृद्धि के लिए प्रोत्साहन देना तथा तदनुरूप साधन सुलभता करने की नीति को अपनाना।
    3. जागृति सहज क्षमता, योग्यता, एवं पात्रता के आधार पर सम्मान व गौरव प्रदान करना।
    4. उत्पादन हेतु अधिकतम श्रम व साधन व्यय करने हेतु प्रोत्साहन देने वाली नीति का विकास करना।
    5. अनेक जाति, वर्ग, मत, संप्रदायों एवं पक्षात्मक विचारों से मुक्त समाधान पूर्ण मानवीयता सहज अखंड समाज नीति का विकास करना।
    6. **स्वधन, स्वनारी/स्वपुरुष, दया पूर्ण कार्य–व्यव्हार नीति का पालन करना।**
    7. हर परिवार में समाधान–समृद्धि सहज आधार पर अमीरी–गरीबी का असंतुलन समाप्त करना।
    8. व्यवस्था के अंतर्गत हर आयुवर्ग के नर–नारियों को न्याय सुलभ कराने की पद्धति का विकास करना। **(अध्याय:16 (ii), पृष्ठ नंबर: 134)**
- समस्त अर्थ नीति द्वारा मानवीयता पूर्ण दृष्टि, स्वभाव व विषय को लक्ष्य में रखते हुए समस्त संपर्क तथा संबंधों का निर्वाह करने में व्यक्ति से लेकर राष्ट्र तक को समृद्धि होने की पूर्ण सम्भावना होनी चाहिए, जिसका मूर्त रूप **स्वधन**, स्व–नारी/स्वपुरुष, एवं दया पूर्ण कार्य–व्यवहारों में निष्ठा एवं परधन, परनारी/परपुरुष एवं परपीड़ात्मक क्रियाओं का निराकरण ही है, क्योंकि अंततोगत्वा समस्त संपर्क एवं सम्बन्ध और संपत्ति का साकार व्यवहार्य रूप स्वधन, स्वनारी/स्वपुरुष और दया पूर्ण कार्य–व्यवहार ही है। **(अध्याय:16 (ii), पृष्ठ नंबर:135)**

*****

संदर्भ: मानव कर्म दर्शन

(संस्करण: 2010, मुद्रण:2017)

- सामाजिक संतुलन **स्वधन**, स्वनारी/स्वपुरूष एवं दया पूर्ण कार्य व्यवहार से है। इसके विपरीत में पर नारी, परपुरूष, पर–धन एवं पर–पीड़ा से असंतुलन ही है, जो प्रत्यक्ष है। **(अध्याय: 1, पृष्ठ नंबर: 9)**
- **स्व–धन**, स्वनारी/स्व पुरूष एवं दयापूर्ण कार्य व्यवहार तथा आचरण से सामाजिक सुख एवं संतुलन का; असंग्रह (समृद्धि), स्नेह, विद्या एवं सरलता से बौद्धिक सुख का; अभयता से आध्यात्मिक आनन्द का अनुभव है। यही भौतिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिकता का उत्पादन, विचार एवं अनुभूति का, व्यक्ति का, व्यक्ति–परिवार–समाज–राष्ट्र एवं अन्तर्राष्ट्र की एक सूत्रता, संतुलन, समाधान एवं समृद्धि है। यही सार्वभौमिक साम्य कामना है।
  (अध्याय: 1, पृष्ठ नंबर: 23)
- मानव का आचरण मूल्य, चरित्र, नैतिकता के संयुक्त रूप में स्पष्ट होना पाया जाता है। मौलिकता पूर्वक ही मूल्यों का मूल्यांकन होना पाया जाता है, मानव में संबंधों का निर्वाह, उसकी निरंतरता, उसकी स्वीकृति एक मौलिकता है। इसी अर्थ में संबंधों की पहचान, मूल्यों का निर्वाह, मूल्यांकन, परस्पर उभय तृप्ति अथवा परस्पर तृप्ति का होना पाया जाता है। यही मूल्य और मौलिकता का तात्पर्य है। **आचरण का दूसरा भाग चरित्र जो स्वधन, स्वनारी, स्वपुरुष, दयापूर्ण कार्य व्यवहार के रूप में सुस्पष्ट होना पाया जाता है, जिससे मानव का मौलिक चरित्र अथवा सार्वभौम चरित्र सुस्पष्ट हो जाता है।** तीसरी विधा में नैतिकता मानव में धर्म नीति और राज्य नीति की अपेक्षा और प्रमाण होना पाया जाता है। प्रमाण रूप में हर जागृत नर–नारी अपने तन, मन, धन रूपी अर्थ के सुरक्षा, सदुपयोग के रूप में प्रस्तुत होते हैं। इसमें से सुरक्षात्मक विधियाँ राजनीति और सदुपयोगात्मक विधियाँ धर्म नीति के नाम से जानी जाती है। **(अध्याय:3, पृष्ठ नंबर: 69)**

संदर्भ: मानव अभ्यास दर्शन

(संस्करण:, मुद्रण: जनवरी, 2018)

- Not Found

संदर्भ: मानव अनुभव दर्शन

(संस्करण: 2011, मुद्रण: 2016)

- Not Found

संदर्भ: समाधानात्मक भौतिकवाद

(संस्करण: 2009)

- ''मानवीयता" व्यवहार में प्रमाणित होने का तात्पर्य यही है कि –
    1. हम जीवन ज्ञान में पारंगत रहेंगे। स्वयं के प्रति विश्वास करेंगे श्रेष्ठता के प्रति सम्मान करेंगे।
    2. अस्तित्व दर्शन में निर्भ्रम रहेंगे।
    3. **स्वधन, स्वनारी/स्वपुरुष, दयापूर्ण कार्य–व्यवहार करेंगे।**
    4. तन, मन, धन रूपी अर्थ का सदुपयोग एवं सुरक्षा करेंगे।
    5. संबंधों को पहचानेंगे, मूल्यों का निर्वाह करेंगे, मूल्यांकन करेंगे।

  यही मानवीयता को व्यवहार में प्रमाणित करने परस्पर तृप्ति और संतुलन का तात्पर्य है।

  (अध्याय:6, पृष्ठ नंबर: 121)

- सही और गलत का संक्रमण बिन्दु अथवा सीमा रेखा जागृत मानव को समझ में आता है। जागृत मानव ही विकसित मानव है। जागृति के लिए प्रयत्नशील मानव ही विकासशील मानव हैं। जागृति के लिए प्रयत्नशील मानव को अल्प जागृत व अर्द्ध जागृत मानव जागृति क्रम कोटि में पहचाना जा सकता है। जागृति का प्रमाण हैं –अस्तित्व दर्शन अर्थात् सह–अस्तित्व के प्रति पूर्ण जागृति अर्थात्:–
    1. अस्तित्व कैसा है, इसका संपूर्ण उत्तर जिसके पास हो।
    2. जो जीवन ज्ञान अर्थात् चैतन्य स्वरूप के अध्ययन में पारंगत हो और जिसका मानवीय आचरण वर्तमान में प्रमाणित हो, यही जागृत व्यक्ति का स्वरूप है।

  इसका मतलब यही हुआ कि जो जीवन को भले प्रकार से जानता मानता हो; अस्तित्व को भले प्रकार से जानता मानता हो और **मानवीयतापूर्ण आचरण अर्थात् स्वधन, स्वनारी, स्वपुरुष और दयापूर्ण कार्य–व्यवहार करता हो**; तन, मन, धन रूपी अर्थ का सदुपयोग एवं सुरक्षा करता हो, संबंधों को पहचानता हो, मूल्यों का निर्वाह करता हो– यही मूल्य, चरित्र, नैतिकतापूर्ण मानवीय आचरण है। इस प्रकार जागृत मानव का स्वरूप, कार्य और प्रमाण स्पष्ट हो जाता है। यह मानव कुल में अध्ययनगम्य होना और व्यवहारिक होना सहज है। जागृत मानव परंपरा का आधार भी इन्हीं तीन तथ्यों का मानव परंपरा में होने मात्र से है। जीवन ज्ञान और मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान के रूप में मानवीयता प्रमाणित होती है। सह–अस्तित्व दर्शन ज्ञान से वर्तमान रूप में विद्वत्ता प्रमाणित होती है। जीवन ज्ञान ही जीवन विद्या है। अस्तित्व ही विद्वत्ता की संपूर्ण वस्तु है। मानवीयता ही संपूर्ण आचरण हैं। अखण्ड समाज ही विद्वत्तापूर्ण मानवत्व का वैभव है। सार्वभौम व्यवस्था ही अस्तित्व में जागृत मानव के अविभाज्य वर्तमान होने का

प्रमाण है। मानव में स्वानुशासन ही जागृति पूर्णता का प्रमाण है। इस प्रकार अच्छाईयों में प्रमाणित, समर्थित मानव में धीरता, वीरता, उदारता, दया, कृपा, करुणा सहज मानवीय स्वभावों से अनुप्राणित, अभिप्रेरित और जीता–जागता स्थिति मिलता है। सही, न्याय, समाधान, अभ्युदय सम्पन्न श्रेष्ठतम मानव परिवार, मानव समाज, मानव व्यवस्था का सहज वैभव है। यही विकसित परिवार अर्थात् जागृत परिवार, जागृत समाज अथवा जागृत मानव अखण्ड समाज के अर्थ में सार्थक हो पाता है।**(अध्याय:6, पृष्ठ नंबर: 130–131)**

- सामाजिक नियम:–
    1. स्वधन अर्थात् प्रतिफल, पारितोष और पुरस्कार रूप में प्राप्त धन से है।
    2. स्वनारी और स्व पुरुष–विवाह पूर्वक प्राप्त दाम्पत्य संबंध।
    3. दया पूर्ण कार्य–व्यवहार अर्थात् अविकसित के विकास में सहायक होने का संपूर्ण कार्य है। **(अध्याय:6, पृष्ठ नंबर: 141)**
- परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था सहज संभावना के लिए, यही सर्वेक्षण आधार हैं। **मानव में, मानवीयतापूर्ण आचरण सहज पहचान इस प्रकार से देखा गया हैं – जो स्वधन, स्वनारी/ स्वपुरुष, दया पूर्ण कार्य–व्यवहार करता हैं।** संबंधों की पहचान, मूल्यों का निर्वाह और मूल्यांकन कार्य करता हैं, उभय तृप्ति सहज प्रमाण होता हैं। तन, मन, धन रूपी अर्थ को सदुपयोग, सुरक्षा करता हैं। यही मानवीयता पूर्ण आचरण का स्वरूप हैं।

  (1) **स्वधन** का स्वरूप है:– प्रतिफल, पारितोष, पुरस्कार से प्राप्त धन। प्रतिफल वह वस्तु हैं – प्राकृतिक ऐश्वर्य पर श्रम नियोजन करने के फलस्वरूप उपयोगिता, सुन्दरता (कला) मूल्यों सहित वस्तुएँ जो उपलब्ध होती हैं और की गई सेवाओं के प्रतिफल में प्राप्त वस्तु पुरस्कार, किसी श्रेष्ठ अभिव्यक्ति के फलस्वरूप में प्राप्त वस्तु हैं। पारितोष, स्नेह मिलन उत्सव को अथवा उत्सव सहज विश्वास के अभिव्यक्ति सहज रूप में प्राप्त वस्तु हैं। जैसे बुजुर्गों से मिलने से, बच्चों से मिलने से, जन्म दिवस, आनंद उत्सव में अर्पित वस्तुएँ पारितोष के रूप में गण्य होती हैं। प्रसन्नता का उत्सव सहित अर्पित वस्तु पारितोष हैं। इस प्रकार से स्वधन का स्वरूप स्पष्ट है।

  (अध्याय: 9–10, पृष्ठ नंबर: 310–311)

- (4) तन, मन, धन रूपी अर्थ की सुरक्षा एवं सदुपयोग:–मनुष्य तन, मन, धन रूपी अर्थ का सदुपयोग करता ही हैं। यह क्रिया मानव में ही होना पाया जाता हैं। तन का स्वरूप सबको समझ में आ गया हैं – पाँचों ज्ञानेन्द्रियों और पाँचों कर्मेन्द्रियों के क्रियाकलाप। मन का स्वरूप – जीवन ज्ञान, अस्तित्व दर्शन, मानवीयता पूर्ण आचरण संपन्न मानसिकता से हैं। कम से कम जीवन ज्ञान संपन्न मानसिकता से हैं। जीवन ज्ञान संपन्नता से ही अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी होना संभव हुआ। जीवन ज्ञान संपन्नता ही निर्भमता का द्योतक होना पाया गया। इसी आधार पर ऐसी ज्ञान संपन्न मानसिकता और स्वस्थ शरीर के संयोग से ही ये तथ्य प्रस्तुत होते हैं। **इसी के साथ स्वधन का (श्रम नियोजन पूर्वक प्राप्त जो कुछ भी धन रहता हैं, उन सब का) सदुपयोग, सुरक्षा प्रत्येक मानव चाहता है।** भ्रमित मानव भी सुरक्षा चाहता हैं, जबकि निर्भम मानव चाहता भी हैं, करता भी हैं। ऐसे सदुपयोग को, सुरक्षा को देखा गया है, परखा गया हैं। इसे इस प्रकार पहचाना जा सकता हैं कि:–.....

  (अध्याय:9–10, पृष्ठ नंबर: 314)

****

संदर्भ: व्यवहारात्मक जनवाद

(संस्करण: 2009, मुद्रण: 2017)

- व्यवहार – मानव परम्परा के साथ

  एक से अधिक मानव की परस्परता में लक्ष्य सम्पन्न होने के अर्थ में किया गया सभी क्रिया, प्रक्रिया, वाद, संवाद ये सब व्यवहार नाम है। व्यवहार सदा–सदा से होता ही आया है। भले लक्ष्य ओझिल क्यो न हो। अभी तक मानव को अपनी परम्परा में लक्ष्य की अपेक्षा तो रही है। संज्ञाननीयता सहित प्रक्रिया, प्रणाली, पद्धतियाँ सार्थक नहीं हो पाई। क्योकि अभी तक जितनी भी मानव परम्परा हुई है ये सब संवेदनशीलता की सीमा में दिखती है। जबकि मानव की आकाँक्षाये संज्ञानशीलता से ही निबद्ध हैं। निबद्ध रहने का तात्पर्य सहज विधि से सहअस्तित्व विधि से अनुबंधित है। जैसे सुख हर मानव चाहता है ऐसे सुख को संवेदनाओ में खोजता है यह कैसे पूरा हो जबकि यह संज्ञानशीलता का वैभव है। समाधान के अनुभव में सुख होना स्पष्ट हो चुका है। समाधान अपने स्वरूप में समझदारी की अभिव्यक्ति होना भी प्रतिपादित हो चुकी है। समझदारी का मूल वस्तु सहअस्तित्व दर्शनज्ञान, जीवन ज्ञान ही है। इस ढंग से संज्ञानशीलता के आधार पर समझना हम पहचान चुके है। इसलिए संज्ञानशीलता अपने में संवेदनाओं को पुष्ट करते हुए नियंत्रित रखना बन जाता है। इस विधि से यह सिद्धान्त स्पष्ट होता है कि संज्ञानशीलता पूर्वक ही संवेदनाएँ नियंत्रित होती है। संज्ञानशीलता पूर्वक संवेदनाएँ नियंत्रित रहती है इस तथ्य की पुष्टि सम्बंधो को पहचानने, निर्वाह करने के रूप में पहचानते हैं। परस्पर मूल्यांकन पूर्वक उभयतृप्ति के रूप में पहचानते हैं। सम्बंध, मूल्य, मूल्यांकन, उभय तृप्ति पूर्वक संवेदनाओ में नियंत्रण पाते है। **फलस्वरूप स्वधन, स्वनारी/स्वपुरूष, दया पूर्ण कार्य व्यवहार पूर्वक नियंत्रण को पहचानते हैं।** तन, मन, धन रूपी अर्थ का सदुपयोग, सुरक्षा पूर्वक संवेदनशीलता के नियंत्रण को पहचानते हैं। समाधान, समृद्धिपूर्वक जीने के क्रम में नियंत्रण समझ में आता है। वर्तमान में विश्वास, सहअस्तित्व प्रमाण विधि से संवेदनाएँ नियंत्रित होना पायी जाती है। अखंड समाज विधि से संवेदनाएँ नियंत्रित होना पायी जाती है। सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी करने के रूप में संवेदनाओं का नियंत्रित होना पाया जाता है। परिवार व्यवस्था में भागीदारी करते हुए संवेदनाओं का नियमित होना पाते है। इस विधि से जागृत परम्परा को प्रमाणित करना बन जाता है अतएव सार्थक संवाद इन मुद्दो पर आवश्यक है ही। **(अध्याय: 6, पृष्ठ नंबर: 78)**

- हर मानव में जागृतिपूर्वक अभिव्यक्त होना एक अभिलाषा के रूप में विद्यमान है ही। जागृत होने की स्वीकृति हर मानव में है ही। जागृति के उपरान्त सर्वोतोमुखी समाधान होना स्वभाविक है। हर नर–नारी में अविभाज्य रूप में विद्यमान, रूप, बल, धन, पद, और बुद्धि का होना पाया जाता है। बुद्धि अपने में अनुभवमूलक होने के आधार पर जागृति का प्रमाण होना संभव हो जाता है ऐसी स्थिति में मानव का सुखी होना स्वभाविक है।इसे इस प्रकार से देखा गया है **मानव स्वधन, स्वनारी/स्वपुरूष, दयापूर्ण कार्य व्यवहार के रूप में आचरण करने के फलस्वरूप**

सुखी होता हुआ स्पष्ट होता है। बल के साथ सुखी होने की विधि को दयापूर्वक व्यवहार करने की स्थिति में स्पष्ट होता है। धन को उदारतापूर्वक सदुपयोग करने की स्थिति में धन से मिलने वाला सुख उपलब्ध होता है, पद का सुख न्याय पूर्वक जीने से अर्थात सम्बन्धों की पहचान, मूल्यो का निर्वाह, मूल्यांकन, उभय तृप्ति के रूप में प्रमाणित होता है। बौद्धिक सुख, सत्यबोध का सुख विवेक और विज्ञान पूर्वक लक्ष्य और दिशा को निर्धारित करने के रूप में सुखी होता है। इसे भले प्रकार से निरीक्षण, परीक्षण, सर्वेक्षण पूर्वकजीकर जीकर देखा है। इस पर जनचर्चा, परामर्श करना स्वीकार करना एक आवश्यकता है। **(अध्याय: 6, पृष्ठ नंबर: 88)**

- मानवीयता पूर्ण आचरण को सहअस्तित्व रूपी दर्शन के आधार पर जीवन ज्ञान के आधार पर पहचाना गया है। मानवीयतापूर्ण आचरण का पहला आयाम सबंधो को पहचानना, मूल्यो का निर्वाह करना, मूल्यांकन करना, परस्परता में तृप्ति को पाना। **दूसरा आयाम में स्वधन, स्वनारी/स्वपुरूष, दयापूर्ण कार्य करना।** तीसरे आयाम में तन, मन, धन रूपी अर्थ का सदुपयोग सुरक्षा करना। तन, मन, धन रूपी अर्थ के सदुपयोग का तात्पर्य परिवारगत आवश्यकता के अनुसार शरीर पोषण संरक्षण और समाजगति में नियोजित करना। मानव समाज अखंड समाज ही होता है। समाज गति का तात्पर्य अखंड समाज के अर्थ में भागीदारी करना अर्थात सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी करना। **(अध्याय: 6, पृष्ठ नंबर: 93)**
- व्यवहारवादी कार्यकलाप

  मानव व्यवहार अपने सम्पूर्ण रूप में या अपनी सम्पूर्णता के अर्थ में मानव संस्कृति, सभ्यता, विधि, व्यवस्था ही है। मानवीय आचरण संस्कृति, सभ्यता का प्रमाण रूप होना पाया जाता है। **मानव संस्कृति स्वधन, स्वनारी/स्वपुरूष, दयापूर्ण कार्य व्यवहार के रूप में प्रमाणित होती है।** सभ्यता का स्वरूप, सभ्यता का प्रमाण सम्बंध मूल्य, मूल्यांकन उभय तृप्ति के रूप में होता है। संस्कृति सभ्यता इन दोनो के आधार पर नैतिकता का स्वरूप तन, मन, धन, रूपी अर्थ का सदुपयोग और सुरक्षा स्पष्ट हो चुका है। इसके आधार पर मानवीयता पूर्ण आचरण स्पष्ट हो चुका है। इस मुद्दे पर लोक स्वीकृति की आवश्यकता है ही। यह जनचर्चा का मुद्दा है। **(अध्याय:7, पृष्ठ नंबर: 97)**
- (चौथे सोपान में) – हर परिवार उपने श्रम नियोजन के फलस्वरूप उपार्जित किये (**धन**) गये में से प्रस्तुत किये गये अंशदान के फलस्वरूप विद्यालय सभी प्रकार से सम्पन्न हो पाता है। **(अध्याय: 7, पृष्ठ नंबर: 118)**

****

संदर्भ: अनुभवात्मक अध्यात्मवाद

(संस्करण: 2009)

- मानवीयतापूर्ण आचरण का तीसरा आयाम चरित्र है । **चरित्र का स्वरूप स्वधन, स्वनारी/स्वपुरूष, दयापूर्ण कार्य–व्यवहार के रूप में पहचाना गया है** । चरित्र का क्रियाकलाप सामाजिक नियम के रूप में सम्पन्न होना पाया जाता है । समाज शब्द से अखण्डता इंगित तथ्य और उसका कार्य स्वरूप जीवन सहज पूर्णता (जागृति) को शरीर रूपी माध्यम से मानव परंपरा में प्रमाणित करना ही है । मानवीयतापूर्ण आचरण से हर व्यक्ति सम्पन्न होना, सार्थक होना मानव के लिये स्वत्व रूप में समीचीन है ही । इसी के साथ–साथ हर मानव में इसकी आवश्यकता का भास–आभास बना ही है । **स्वधन का परिभाषा है –** अर्थात् कार्य रूप है । प्रतिफल, पारितोष और पुरस्कार से प्राप्त धन । मूलत: धन का स्वरूप उपयोगिता और सुन्दरता मूल्य सम्पन्न वस्तुओं के रूप में होना पाया जाता है । जैसे आहार, आवास, अलंकार, दूरदर्शन, दूरश्रवण और दूरगमन रूपी वस्तुएँ है। इन सबमें उपयोगिता मूल्य, कला मूल्य को मानव ही मूल्यांकित करता है । ऐसी सभी वस्तुएँ (धन) मानव सहज श्रम नियोजन पूर्वक सम्पन्न हुआ होना पाया जाता है । ऐसा धन किसी का भी स्वत्व रूप में होता है, प्राकृतिक ऐश्वर्य पर नियोजन किया गया श्रम के फलन में ही स्पष्ट होता है । ऐसे फलन को ही श्रम का प्रतिफल है। पारितोष भी किसी का स्वधन होना स्वाभाविक है । अपने **स्वधन** को स्वयं स्फूर्त प्रसन्नता में, से, के लिये हस्तांतरित करना, अर्पित करने की क्रिया को पारितोष है । पुरस्कार से प्राप्त धन किसी सार्थक घटना, कार्य, प्रमाण, प्रकाशन, अभिव्यक्ति, संप्रेषणा प्रकाशन के फलस्वरूप उत्सव का अनुभव करता हुआ एक से अधिक लोग एकत्रित होकर ऐसे धन को अर्पित करने की क्रिया है । इन तीनों प्रकार से प्राप्त धन **स्वधन** की संज्ञा में आता है । तन, मन के साथ ऐसे **स्वधन** को सदुपयोग, सुरक्षा करने का अधिकार हर मानव में होता है । **(अध्याय:5, पृष्ठ नंबर: 160– 161)**
- जीवन प्रतिष्ठा सदा–सदा पीढ़ी रहते हुए मानव परंपरा में वैभवित होने के लिये ही संयोगित होना देखा गया है क्योंकि–
    1. मानव परंपरा में जागृति और उसका प्रमाण ही तृप्ति का स्त्रोत है । तृप्ति में मानवापेक्षा–जीवनापेक्षा का संतुलन ही है ।
    2. मानव परंपरा में सर्वतोमुखी समाधान का प्रयोजन, कार्य और प्रमाणों की आवश्यकता बना ही रहता है। फलस्वरूप हर व्यक्ति के लिये भागीदारी का स्थान इसमें बना ही रहता है ।
    3. जागृति पूर्णता और प्रामाणिकता सहित ही अखण्ड–समाज, सार्वभौम व्यवस्था सर्वमानव में, से, के लिए समीचीन है ।
    4. सर्वतोमुखी समाधान पूर्वक ही स्वायत्त मानव, परिवार मानव, समाज मानव और व्यवस्था मानव प्रतिष्ठा प्रमाणित होता है ।

5. जागृति पूर्वक ही अज्ञात का ज्ञात, अप्राप्ति का प्राप्ति समीचीन रहता है ।

6. जागृति पूर्वक ही मानव अस्तित्व में अनुभूत होता है अथवा अस्तित्व में अनुभूत होना ही जागृति है ।

उक्त क्रम से बौद्धिक रूप में समाधानित होना स्वभाविक है यह तथ्य स्पष्ट हो गया । यह तथ्य भी जागृति का ही द्योतक है । जागृति के अनन्तर हर व्यक्ति स्वाभाविक रूप में असंग्रह प्रतिष्ठा को समृद्धि पूर्वक, स्नेह प्रतिष्ठा को पूरकता पूर्वक, विद्या प्रतिष्ठा को जीवन विद्या पूर्वक, सरलता प्रतिष्ठा को सह–अस्तित्व दर्शन पूर्वक, अभय प्रतिष्ठा को मानवीयता पूर्ण आचरण पूर्वक वैभवित होने के लिए सूझ–बूझ पूर्वक कार्य करता हुआ देखने को मिलता है । यही मुख्यत: बौद्धिक नियम है। ऐसे बौद्धिक नियम सम्पन्न मानव स्वाभाविक रूप में मानवीयता पूर्ण आचरण सम्पन्न होता है जो मूल्य, चरित्र, नैतिकता का अविभाज्य वैभव है। **जिसमें से मानवीयतापूर्ण चरित्र जो स्वधन, स्वनारी/पुरुष, दयापूर्ण कार्य व्यवहार है ।** जो अखण्ड सामाजिक नियम के रूप में प्रभावित होता है । संबंधो में मूल्यों को पहचानना, निर्वाह करना, मूल्यांकन करना फलस्वरूप उभय तृप्ति ही मानवीय मूल्य का स्वरूप है । तन, मन, धन का सदुपयोग एवं सुरक्षा नैतिकता है। यद्यपि पहले भी सामाजिक नियम और प्राकृतिक नियम का विस्तृत व्याख्या कर चुके हैं । यहाँ जागृति और प्रामाणिकता पूर्वक उक्त तथ्यों को स्मरण में लाना उचित समझा गया है । यहाँ उल्लेखनीय तथ्य यही है अस्तित्व स्वयं सह–अस्तित्व के रूप में नियमित है फलत: अस्तित्व में व्यवस्था अक्षुण्ण है । मानव भी अस्तित्व में अविभाज्य है । अतएव नियम त्रय पूर्वक ही मानव मानवापेक्षा और जीवन अपेक्षा को सार्थक बना सकता है । **(अध्याय:5, पृष्ठ नंबर: 185–187)**

****

संदर्भ: व्यवहारवादी समाजशास्त्र

(संस्करण : 2009)

- मानव, मानवीयतापूर्ण आचरण जो **स्वधन**, स्वनारी/स्वपुरूष, दयापूर्ण कार्य–व्यवहार, संबंधों की पहचान व मूल्यों का निर्वाह; तन, मन, धन रूपी अर्थ का सदुपयोग व सुरक्षा के रूप में मानवीयता की व्याख्या है। यह मानव परंपरा में मौलिक विधान है। (**अध्याय: 6, पृष्ठ नंबर: 142**)
- **चरित्र के स्वरूप को स्वधन, स्वनारी/स्वपुरूष एवं दयापूर्ण कार्य–व्यवहार के रूप में देखा गया है।** यह तीनों स्थितियाँ मानव में ही परिभाषित रहना पाया जाता है। मानव में यह परिभाषित होने के आधार को मानवत्व रूपी मूल्य, चरित्र, नैतिकता का सामरस्यता सूत्र में वर्तमान रहता हुआ देखा गया है, देखा जा सकता है। इसका प्रयोजन सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी को निर्वाह करना ही होता है। सार्वभौम व्यवस्था अपने में नैतिकतापूर्ण अखण्ड समाज संतुलन को सूत्रित–व्याख्यायित करता है। यही मानवत्व के संबंध में सम्पूर्ण अध्ययन का स्वरूप होना देखा गया है। (**अध्याय: 6, पृष्ठ नंबर: 147–148**)
- स्वायत्ततापूर्ण परिवार मानव अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था सूत्र से जीता–जागता हुआ परम्परा में नर–नारी का समानाधिकार, मानवत्व पर समानाधिकार होना स्पष्ट हो चुकी है। ऐसा अधिकार अर्थात् मानवीयता रूपी अधिकार, कल्पनाशीलता का तृप्ति बिन्दु रूपी परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था में भागीदारी को निर्वाह करने में और कर्म स्वतंत्रता का तृप्ति बिन्दु के प्रमाण रूप में प्रामाणिकता पूर्वक स्वानुशासित होना, प्रमाणित करना ही है। **इस मूल उद्देश्य को पीढ़ी से पीढ़ी में अर्पित करने के क्रम में सम्बन्ध– मूल्य–मूल्यांकन, उभयतृप्ति, तन–मन–धन रूपी अर्थ का सदुपयोग–सुरक्षा; स्वधन, स्वनारी/स्वपुरूष, दयापूर्ण कार्य–व्यवहार करना ही सम्पूर्ण व्यवहार है।** जिसके फलस्वरूप समाधान, समृद्धि, अभय, सह–अस्तित्व हर परिवार में प्रमाणित होना ही मानव परंपरा है। इसी में हर नर–नारी भागीदारी को निर्वाह करना है। समानाधिकार का प्रयोजन यही है। इन प्रयोजनों का परम्परा में होना स्वाभाविक है हर व्यक्ति स्वायत्त होने के फलस्वरूप पराधीनता, परतंत्रता दोनों का उन्मूलन हुआ रहता है। इसके विपरीत परिवार मानव और व्यवस्था मानव के रूप में नित्य योजना हर नर–नारी के सम्मुख स्पष्ट रहता है। इसलिये विवाहोत्सव समय में पारितोष रूप में वस्तुओं का आदान–प्रदान स्वयं स्फूर्त विधि से जो कुछ भी मात्रा के रूप में हो पाता है, वही अधिकाधिक होना स्वाभाविक है। इस प्रकार विवाहोत्सव समय में आडम्बर के लिये किये जाने वाले व्यय अपने–आप संयमित होता है। सार्थक कार्यो में सदुपयोगी विधि से प्रयोजित हो पाता है। अतएव मानव परंपरा में विवाहोत्सव समय में लेन–देन की प्रतिज्ञा–प्रतिबद्धता की आवश्यकता नहीं है। (**अध्याय: 6, पृष्ठ नंबर: 155–156**)

- **स्वधन :– प्रतिफल, पारितोष और पुरस्कार से प्राप्त धन।**

प्रतिफल रूपी **स्वधन** श्रम नियोजन और सेवा के प्रतिफल के रूप में देखा गया। श्रम नियोजन की नित्य संभावना और स्वरूप को सामान्य आकांक्षा एवं महत्वाकांक्षा सम्बंधी वस्तुओं को पाने की विधि से किया गया कुशलता, निपुणता, मानसिकता और विचार सहित किया गया हस्तलाघव कार्यकलाप। परस्पर सेवा का तात्पर्य यही है बिगड़े हुए वस्तु, यंत्रों, मानव तथा जीव शरीरों को सुधारना। इस विधि से श्रम नियोजन और सेवा दोनों ही स्पष्ट है। इन क्रिया कलाप के प्रतिफल में सामान्य आकांक्षा एवं महत्वाकांक्षा संबंधी वस्तुएं उपलब्ध होना ही सम्पूर्ण प्रतिफल कार्यकलाप है।

तथ्य :– मानवीयतापूर्ण विधि से अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी का होना प्रधान लक्ष्य है। इसी विधि में मौलिक अधिकार और इसी क्रम में मौलिक अधिकार का स्पष्टीकरण एक दूसरे को इंगित होता है, स्वीकृत होता है, जाँचने की विधि स्वयं स्फूर्त होता है। इसी क्रम में स्वायत्त मानव के वैभवों का परीक्षण जैसा– (1) स्वयं के प्रति विश्वास, श्रेष्ठता के प्रति सम्मान करने का अधिकार, प्रक्रिया और प्रमाण, (2) प्रतिभा और व्यक्तित्व में संतुलनाधिकार प्रक्रिया और प्रमाण और (3) व्यवहार में सामाजिक एवं व्यवसाय में स्वावलंबनाधिकार, प्रक्रिया और प्रमाण एक दूसरे को समझ में आता है। समझ में आने का तात्पर्य जानने–मानने–पहचानने–निर्वाह करने से है। ऐसे मानव ही परिवार मानव और व्यवस्था मानव के रूप में प्रमाणित होना सहज है। यही सम्पूर्ण स्वत्व स्वतंत्रता और अधिकारों का वैभव और विस्तार है। इस प्रकार कर्तव्य दायित्व ही समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, भागीदारी के रूप में अधिकार है।

इससे यह स्पष्ट हो गया है कि हर मानव चाहे नर हो चाहे नारी हो, स्वस्थ रहने के मापदण्ड अस्तित्व सहज सह–अस्तित्व क्रम में स्वायत्त मानव के रूप में स्पष्ट किया जा चुका है। जिनमें ही मानवत्व रूपी स्वत्व, स्वतंत्रता, अधिकार को स्वयं स्फूर्त विधि से प्रमाणित होना पाया गया है। ऐसा स्वायत्त मानव स्वस्थ मानव परिवार परंपरा में, व्यवहार परंपरा में, उत्पादन परंपरा में, विनिमय परंपरा में, स्वास्थ्य–संयम परंपरा में, मानवीयता पूर्ण शिक्षा–संस्कार परंपरा में और न्याय–सुरक्षा परंपरा में भागीदारी को निर्वाह करना ही समग्र व्यवस्था में भागीदारी का तात्पर्य है। यह समझदार परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था विधि से समाज रचना परिवार से ग्राम परिवार, ग्राम परिवार से विश्व परिवार तक और ग्राम स्वराज्य सभा से विश्व परिवार सभा तक इन सभी आयामों में भागीदारी का सूत्र, व्याख्या अग्रिम अध्यायों में स्पष्ट हो जाएगी।

सेवा :– उत्पादन–कार्य में भागीदारी ही श्रम नियोजन का प्रधान अवसर, संभावना व आवश्यकता है क्योंकि परिवार सहज आवश्यकता, शरीर पोषण, संरक्षण और समाज गति के अर्थ में उत्पादन का प्रयोजन स्पष्ट होता है। इनमें आहार, आवास, अलंकार और दूरदर्शन, दूरश्रवण और दूरगमन संबंधी वस्तु व उपकरण गण्य हैं। आवास, अलंकार और दूरश्रवण, दूरदर्शन, दूरगमन संबंधी उपकरणों के सम्बंध में स्वाभाविक रूप में ही मतभेद विहीन होना

पाया जाता है। जहाँ तक आहार संबंधी बात है शाकाहार–मांसाहार भेद से पूर्ववर्ती समय काल युगों से अभ्यस्त होना पाया गया। इस मुद्दे पर यह देखा गया है मानवीयतापूर्ण समझदारी और शिष्टता के योगफल में जीने की कला प्रादुर्भूत होता ही है। जिसमें से एक आयाम आहार प्रणाली एवं वस्तुओं का चयन है।

मानव परंपरा में सह–अस्तित्व एक नित्य प्रभावी सूत्र है जिसके आधार पर अभयता (सकारात्मक रूप में वर्तमान में विश्वास) जिसका गवाही परिवार व्यवस्था में जीना और समग्र व्यवस्था में भागीदारी को निर्वाह करना है। इस प्रकार जीने की कला और शैली में हिंसा विधि की आवश्यकता सर्वथा शून्य होना पाया जाता है। हिंसा–अहिंसा की निर्धारण रेखा जीवावस्था और प्राणावस्था के बीच में है। प्राणावस्था की रचनाएं रासायनिक–भौतिक स्वरूप में होते हुए उसका उपयोग–सदुपयोग, संतुलन के अर्थ में नैसर्गिक रूप में करता हुआ देखने को मिलता है। ज्ञानावस्था का मानव जीवावस्था से मांस प्राप्त करना कुछ समुदायों में वैध माना है कुछ समुदाय इसे अवैध मानते रहे हैं। इसका निराकरण मानवीयतापूर्ण मानसिकता से स्वयं स्फूर्त होता है कि :–

(1) जीव एवं मानव शरीर भी रासायनिक–भौतिक द्रव्यों से रचित हुआ है। इनमें निहित द्रव्य प्राणावस्था के रासायनिक–भौतिक द्रव्यों के समान ही है। इन्हीं तर्क के साथ मांसाहर की वकालत हुआ है। पूर्ववर्ती आदतें जीवों के जीवनी क्रम विधि में दिखाई पड़ने वाली मांसाहारी और शाकाहारी पशुओं से ग्रहित हुई है। इस प्रकार मानव समुदाय में आदतों के रूप में शुमार है।

(2) प्रत्येक जीव शरीर, का संचालन एक जीवन ही करता है। जीवन का स्वत्व रूपी शरीर को बल और क्रूरतापूर्वक भक्षण कर लेने के क्रियाकलाप को मांसाहारी प्रणाली के रूप में देखा गया है। जीवन स्वत्व के रूप में मानव का शरीर भी है। सप्त धातुओं से रचित मेधस युक्त शरीर को जीवन संचालित करता ही है इसलिये जीवावस्था और ज्ञानावस्था प्रतिष्ठित है। ज्ञानावस्था के मानव शरीर रचना परंपरा में समृद्धिपूर्ण मेधस रचना प्रमाणित हो चुकी है। इसी कारणवश मानव अपने दृष्टा पद प्रतिष्ठा सहज रूप में ज्ञानावस्था, जीवावस्था, प्राणावस्था और पदार्थावस्था का अध्ययन करता है, किया है, इसी के प्रमाण में हिंसा और अहिंसा के विभाजन रेखा का दृष्टा भी मानव ही है।

इसका तात्पर्य यही हुआ कि प्राणावस्था के उपरान्त जीवावस्था और स्वेदज संसार सब मांसाहार या मांसाहार के तुल्य में गण्य हो जाता है। यद्यपि स्वदेज संसार की वस्तुयें माँस, वनस्पति नहीं होते हुए भी उसका सह–अस्तित्व संयोजन विधि से सार्थक होना देखा गया है।

मांसाहार विधि से चला हुआ ज्ञानावस्था की इकाई मानव के लिए हिंसक–घातक होना देखा गया है। उसी के साथ यह भी देखा गया कि शाकाहारी भी हिंसक–घातक होना देखा गया। इससे बहुत स्पष्ट है केवल आहार विधि ही मानवीयता सहज सम्पूर्णता नहीं है। आहार एक आयाम है। इसके पहले यह भी स्पष्ट हो चुकी है ज्ञानावस्था की

इकाई समझने के उपरान्त ही सम्पूर्ण कार्य–व्यवहार विन्यास करने योग्य है और बहुआयामी अभिव्यक्ति है। इसलिये यह इस विश्लेषण से स्पष्ट हो चुकी है कि चाहे शाकाहारी हो, चाहे मांसाहारी हो, पशुमानव, राक्षसमानव के अर्हता में दोनों प्रकार की आदतें समान दिखाई पड़ती है वहीं मानवीयतापूर्ण मानव के रूप में जीने की कला के अंगभूत आहार पद्धति चयन करने के क्रम में मानव शरीर रचना शाकाहारी पद्धति के योग्य बना है, इसके विपरीत कुछ भी सोचना, भ्रमित मानस होना स्पष्ट हो चुका है।

जितने भी शाकाहारी वस्तुएं है इसमें मानव का श्रम नियोजन अति अनिवार्य रहता ही है। श्रम नियोजन का प्रतिफल होता ही है। शाकाहार संबंधी वस्तुओं को हम उपयोग करने पर न करने पर दोनों ही स्थितियों में धरती में ही उर्वरक प्रयोजन में प्रयोजित होता है, इसलिये इसमें आवर्तनशीलता व्याख्यायित है। शाकाहारी वस्तुओं के साथ मानव का निपुणता, कुशलता का संयोजन प्रयोजन के रूप में प्रमाणित होता है। शाकाहारी विधि से मानव का शरीर पुष्टि, संतुलन एवं धरती का उर्वरक संतुलन का एक सूत्रता बन पाता है। इसी क्रम में मानव सह–अस्तित्व वैभव प्रतिष्ठा पाने का सूत्र आहार पद्धति पूर्वक भी प्रमाणित होता है।

मांसाहारी प्रणाली–प्रकिया से इस धरती पर ज्ञानावस्था के मानव परंपरा में जितने भी संतान हैं और रहेंगे और रहे हैं इनमें से कोई ऐसा इकाई अर्थात् एक मानव ऐसा नहीं मिलेगा जो हिंसा – अहिंसा के रेखा का प्रमाण प्रस्तुत किया हो। यह मानव कुल का सौभाग्य है दूसरा भाषा में ज्ञानावस्था का सौभाग्य है कि जीवन ज्ञान से स्वयं ही दृष्टा पद में होने का सत्य स्वीकारता है, अस्तित्व दर्शन से सह–अस्तित्व को पूर्णतया स्वीकारता है। इस विधि से जीवन का भी दृष्टा–ज्ञाता मानव ही है और अस्तित्व में दृष्टा–ज्ञाता मानव ही है। यह प्रत्येक व्यक्ति में अध्ययन पूर्वक स्वीकृति अवधारणा और अनुभव होने की व्यवस्था है अनुभव मूलक विधि से प्रत्येक व्यक्ति के प्रमाणित होने की व्यवस्था है। यह भी आवर्तनशीलता है। इसी विधि से अनुभव गामी और अनुभव मूलक विधि से प्रत्येक आयाम, कोण, दिशा, परिप्रेक्ष्य में सर्वकाल एवं सर्वदेश में समाधान समीकृत होता ही रहता है। इसे भले प्रकार से देखा गया है। अतएव मानवीयतापूर्ण मानव, देवमानव व दिव्यमानव ही हिंसा–अहिंसा के विभाजन रेखा का दृष्टा होना स्वाभाविक है। मानवीयतापूर्ण मानव होने के सत्यापन सहित ही समाधान की ओर हर मानव का गति होना स्वाभाविक है। अतएव आहार, प्रणाली, पद्धति को अपनाने का आधार मानवीयतापूर्ण मानव परंपरा में से के लिए पशुमानव, राक्षस मानव का प्रवृत्ति आधार नहीं हो पाता है। केवल मानवीयतापूर्ण मानव ही स्पष्टतया आधार हो पाता है।

मानवीयतापूर्ण नजरिये से सम्पूर्ण प्रकार के मांसाहार, हिंसा के सूत्र से सूत्रित हो जाता है। फलस्वरूप मानव मानव के साथ भी हिंसा, द्रोह, विद्रोह, शोषण में लिप्त होना विगत के इतिहास के अनुसार देखा गया है। इस बीसवीं शताब्दी के दसवें दशक तक भी इसी प्रकार की गवाहियाँ देखा गया। समझदारी पूर्वक पता चलता है कि शाकाहारी पशु ओंठ से पानी पीते हैं तथा मांसाहारी पशु जीभ से। इन्हीं के अनुसार दोनों में भिन्न–भिन्न प्रकार के दांत,

नाखून बने रहते हैं साथ में यह भी स्पष्ट हो चुका है कि मांसाहारी पशुओं की आँते छोटी और शाकाहारी पशुओं की आँते लम्बी होती है।

शाकाहार सदा ही आवर्तनशीलता, ऊर्जा संतुलन, उर्वरक कार्यों में गुणवत्ता के आधार पर सूत्रित रहता है। कृषि कार्यों के आधार पर पशुपालन, पशुपालन के आधार पर कृषि कार्य में पूरकता स्वाभाविक रूप में देखा गया है। इसी के साथ–साथ मानवकृत वातावरण का संतुलन, नैसर्गिक संतुलन में भागीदारी भी सह–अस्तित्व सहज कार्यकलापों का एक अविभाज्य वैभव रहा है। ये सब पूरक विधि से ही प्रमाणित हो पाता है। हिंसा, शोषण और दोहन विधि से पूरकता, आवर्तनशीलता प्रमाणित नहीं हो पायी है। अतएव मानवीयतापूर्ण परंपरा स्वायत्तता पूरकता व आवर्तनशीलता का संतुलित संगीत विधि से ही समाधान, समृद्धि, अभय, सह–अस्तित्व को प्रमणित करता है। यह सर्वमानव में स्वीकृत है। इस प्रकार हम मानव प्रतिफल के रूप में कृषि, पशुपालन, ग्राम शिल्प, हस्तकला, कुटीर उद्योग, ग्रामोद्योग और लघु–गुरु उद्योग पूर्वक सामान्याकांक्षा एवं महत्वाकांक्षा सम्बंधी वस्तुओं को श्रम नियोजन और सेवा पूर्वक प्रतिफल के रूप में पा सकते है।

स्वधन का दूसरा भाग पारितोषिक–इसकी परिभाषा ही है प्रसन्नतापूर्वक, प्रसन्नता के लिये प्रदत्त वस्तुएं। ये प्रधानतः उत्सवों के अवसर पर आदान–प्रदान किया जाना मानवीयतापूर्ण मानस के लिये एक आवश्यकता है ही। इस प्रकार प्राप्त धन भी स्वधन में गण्य होता है।

तीसरे प्रकार से स्वधन, पुरस्कार के रूप में प्राप्त धन। मानवीयतापूर्ण परंपरा में श्रेष्ठता का सम्मान होना स्वाभाविक है। श्रेष्ठता का मूल्यांकन मानवीयतापूर्ण परंपरा में व्यवस्था में भागीदारी, स्वायत्त मानव, परिवार मानव और समग्र व्यवस्था में भागीदारी उसकी गति और श्रेष्ठता पुरस्कृत होना स्वाभाविक है। इसी के साथ–साथ स्वास्थ्य–संयम कार्यों में श्रेष्ठता, उत्पादन–कार्यों में श्रेष्ठता, विनिमय–कार्यों में श्रेष्ठता, मानवीयतापूर्ण शिक्षा–संस्कार कार्यों में श्रेष्ठता का मूल्यांकन और पुरस्कार मानव परंपरा में सहज है। इन किसी भी विधाओं का मूल्यांकन और पुरस्कार मानव परंपरा में सहज है। इन किसी भी विधाओं में श्रेष्ठता का सम्मान ग्राम परिवार सभा से विश्व परिवार सभा तक किसी स्तरीय परिवार सभा में श्रेष्ठ व्यक्ति का सम्मान किया जाना मानव परंपरा का ही सम्मान है। इस विधि से प्राप्त वस्तु स्वधन में गण्य होता है।

मानवीयता पूर्ण चरित्र और उसकी गति दयापूर्ण कार्य–व्यवहार में होना पाया जाता है। सम्पूर्ण श्रम शक्ति का नियोजन पूरक विधि से अर्थात् जिस विधा से मानव का श्रम नियोजन होता है अथवा जिस वस्तु पर मानव का श्रम नियोजन होता है उसका संरक्षण होना दयापूर्ण कार्य का तात्पर्य है। हर उत्पादन में सह–अस्तित्व विधि से वस्तु व द्रव्यों का सुरक्षा पूर्वक ही प्रतिफल की प्राप्ति और संतुलन का प्रमाण स्वाभाविक रूप में प्रमाणित होता है। दूसरी विधा में मानव–मानव के साथ व्यवहार करता ही है। व्यवहार क्रम में तन–मन–धन रूपी अर्थ का सदुपयोग

करना किसी का पोषण, संरक्षण, समाज गति के रूप में सदुपयोग होना प्रमाणित होता है। इस क्रम में यही मानव के साथ दयापूर्ण व्यवहार का तात्पर्य है। यही जीने देकर जीने का प्रमाण है। **(अध्याय:6, पृष्ठ नंबर: 157– 166)**

- **धन के साथ उदारता** – उदारता का उत्तरोत्तर जागृति की ओर तन, मन, धन रूपी अर्थ को नियोजित करना ही है। हर पीढ़ी, अग्रिम पीढ़ी को अपने से श्रेष्ठ होने का कामना करता ही है। हर स्थिति, हर गति, हर देशकाल में मानव अपने श्रेष्ठता को जागृति क्रम, जागृति, जागृतिपूर्णता और उसकी निरंतरता विधि से ही प्रमाणित करता है। जागृति और जागृतिपूर्णता स्वायत्त मानवीयता सहज पारंगत प्रमाण ही होना पाया जाता है। जागृति क्रम स्वायत्त मानव पद प्रतिष्ठा पर्यन्त निश्चित है। इस क्रम में परंपरा जागृत रहना एक अनिवार्य स्थिति रहती है। तभी मानवीयता पूर्ण परंपरा सहज सार्थकता प्रमाणित होती है।

  अतएव जीने देकर जीना जागृति के उपरान्त हर व्यक्ति के लिये सहज प्रक्रिया है। तन, मन, धन रूपी अर्थ शरीर पोषण, संरक्षण, समाज गति व्यवस्था सहज स्वीकृति और समग्र व्यवस्था में भागीदारी को निर्वाह करने के क्रियाकलापों में अर्थ सम्पूर्णतया सार्थक होना, सदुपयोग होना होता है। इसी क्रियाकलापों में नियोजित अर्थ प्रक्रिया का उदारता नाम है।

  उदारता अपने में जागृति सहजता की ओर इंगित क्रिया में उन्मुख रहता है। उदात्तीकरण स्वाभाविक रूप में जागृति के जिस बिन्दु में जो रहता है उससे आगे के बिन्दुओं की ओर गतित करना/हो जाना ही उदात्तीकरण का तात्पर्य है। यह पूरकता विधि से ही होना पाया जाता है। मानव सहज सदुपयोग विधि स्वयं में उदारता है। यह सुख का स्रोत है। उदारतापूर्वक मानव सुखी होना देखा गया है। **(अध्याय:6, पृष्ठ नंबर: 168–169)**

- सम्बन्ध का तात्पर्य स्वयं में पूर्णता सहित हर मानव में पूर्णता के अर्थ में अनुबंधित रहना स्वाभाविक है। यह मानव में ही प्रमाणित होने वाला मौलिक अभिव्यक्ति है। यही ज्ञानावस्था का परिचायक है। इसी के साथ मानव को, इसकी अपेक्षा, आवश्यकता नियति सहज विधि से देखने को मिलता है। अर्थात् मानव संबंध के अनुरूप प्रयोजनों को प्रमाणित करने में निष्ठा स्वयं स्फूर्त होता है। अपेक्षाओं के अनुसार सार्थक होना, चरितार्थ होना ही सम्बन्धों का सम्पूर्ण प्रयोजन है। प्रयोजनों का सूत्र अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था, परिवार मानव और स्वायत्त मानव रूप में ही मानव परंपरा में देखने को मिलता है। यही प्रयोजनों का मूल रूप है। इसे ज्ञानावस्था का स्वरूप भी कहा जा सकता है। जागृत मानव परंपरा में यह सार्थकता का स्वरूप शिक्षा–संस्कारपूर्वक परंपरा में स्थापित होता ही रहेगा। जागृत शिक्षा–संस्कार के सम्बन्ध में स्पष्ट किया जा चुका है। जागृतिपूर्ण परंपरा अस्तित्व सहज सह–अस्तित्व विधि से अनुप्राणित रहने के आधार पर ही जागृत मानव परंपरा का अक्षुण्णता समीचीन रहना पाया जाता है। अतएव सम्पूर्ण सम्बन्ध और उसका सम्बोधन निश्चित प्रयोजन के अर्थ में अपेक्षित रहना ही सम्बोधन का तात्पर्य है। इसमें हर व्यक्ति जागृत रहना यह प्राथमिक दायित्व है। इन्हीं दायित्वों, मौलिक अधिकारों का प्रयोजन सहज ही सफल हो पाता है। फलस्वरूप मानव परंपरा में जीने की कला विधि के रूप में प्रमाणित होता है। **विधि**

का प्रमाण स्वयं सम्बन्ध–मूल्य–मूल्यांकन–उभयतृप्ति, मानव परिभाषा के अनुरूप हर मानव अपने मौलिक अधिकार रूपी स्वतंत्रता का प्रयोग करना, तन, मन, धन रूपी अर्थ का सदुपयोग–सुरक्षा करना और स्वधन, स्वनारी/स्वपुरूष, दयापूर्ण कार्य–व्यवहार में निष्ठान्वित रहना विधि है। यही सम्पूर्ण उत्सवों का आधार होना पाया जाता है। **(अध्याय:9, पृष्ठ नंबर: 270–271)**

- व्यवहार कार्यों को मूल्य, चरित्र और नैतिकता का पूरक विधि से सम्पन्न होना देखा गया है। यही मानवीयतापूर्ण आचरण का वैभव है और प्रमाण है। व्यवहार में न्यायपूर्वक नियमों का, व्यवस्था में नियमपूर्वक न्याय का अनुबंधित रहना दिखाई पड़ता है। इसे हर मानव अनुभव करता ही है या करेगा ही। जैसे :– हर सम्बन्धों में मूल्य, मूल्यांकन, उभयतृप्ति यह न्याय का स्वरूप है। इसके समर्थन में अथवा इसके पूरकता में नियम के रूप में तन, मन, धन रूपी अर्थ का सदुपयोग–सुरक्षा प्रमाणित होता है। **इनके पूरकता में स्वधन, स्वनारी/स्वपुरूष, दयापूर्ण कार्य–व्यवहार सम्पन्न होना देखा गया है।** मूल्यांकन का यह आधार बिन्दु है। दूसरा आधार बिन्दु मानव अपने परिभाषा के अनुरूप 'त्व' सहित व्यवस्था में जीने की कला को प्रमाणित करता है। यही समाधान, समृद्धि, अभय, सह–अस्तित्व के रूप में तृप्ति का स्रोत और गति अनुस्यूत रूप में बना ही रहता है। यही व्यवस्था का वैभव होना पाया जाता है। **(अध्याय:10, पृष्ठ नंबर: 294)**

****

संदर्भ: आवर्तनशील अर्थशास्त्र

(संस्करण: 2009)

- भ्रम–निर्भ्रमता को आंकलित करना, जीव चेतना एवं मानव चेतना के आधार पर है। जीवन ज्ञान, सह–अस्तित्व दर्शन ज्ञान, मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान में पारंगत होने के उपरांत ही तुलनात्मक समझ संभव होना पाया गया। इन्हीं आधारों पर आवर्तनशील अर्थशास्त्र और व्यवस्था की भी संभावना स्पष्ट हुई है। यही रोशनी सह–अस्तित्ववादी विश्व दृष्टिकोण को स्पष्ट करता है। जीवन ज्ञान सम्पन्न होने के उपरान्त ही सह–अस्तित्व में अविभाज्य मानव सह–अस्तित्व को जानना, मानना, पहचानना, निर्वाह करना संभव हुआ है। पहचानने, निर्वाह करने के क्रम में ही मानवीयतापूर्ण आचरण प्रमाणित होना पाया जाता है। मानवीयता पूर्ण आचरण मूलत: तीनों आयाम में (मूल्य, चरित्र, नैतिकता) सम्पन्न होता है। **मानवीयता पूर्ण चरित्र को स्वधन, स्वनारी/स्वपुरूष, दयापूर्ण कार्य–व्यवहार के रूप में देखा गया है।** चरित्र के साथ मूल्यों का स्वरुप को संबंधों की पहचान, मानव मूल्य, स्थापित मूल्य, शिष्ट मूल्य का निर्वाह, मूल्यांकन पूर्वक उभयतृप्ति के रुप में होना देखा गया है। नैतिकता को तन, मन, धन रूपी अर्थ का सदुपयोग और सुरक्षा के रूप में देखा गया है। चरित्र के रूप में समाज मानव, मूल्य के रूप में परिवार मानव और नैतिकता के रूप में व्यवस्था मानव होना प्रमाणित है। यह मानवत्व रूपी मानव चेतना पूर्वक सार्थक होना पाया जाता है। **(अध्याय: 4, पृष्ठ नंबर:112–113)**
- मानव का वैभव अथवा परम वैभव सह–अस्तित्व में अनुभवमूलक विधि से प्रमाणित करना ही कर्म स्वतंत्रता का तृप्ति है। यही जीवन जागृति का भी प्रमाण है। इसी का वैभव स्वाभाविक रूप में ही परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था और उसकी निरंतरता परम्परा के रूप में चरितार्थ होना पाया जाता है। ऐसी परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था में भागीदारी केवल परिवार मानव सहज अधिकार स्वत्व, स्वतंत्रता के आधार पर वैभव (व्यवस्था) प्रमाणित होता है। तन, मन, धन रूपी अर्थ का सदुपयोग–सुरक्षा परिवार मानव विधि से चरितार्थ हो पाता है। चरितार्थता का तात्पर्य मानवीयतापूर्ण चरित्र में ही नैतिकता अर्थात् तन, मन, धन रूपी अर्थ का सदुपयोग–सुरक्षात्मक नीति का व्यवहारीकरण पूर्वक प्रमाणित होता है। व्यवहारीकरण स्वरूप को इस प्रकार समझा गया है कि हर व्यक्ति में तन, मन, धन रूपी अर्थ होता ही है। तन और मन के संयोग मानव में नित्य वर्तमान और प्रमाण है। आशा, विचार, इच्छा सहित ही हर प्रकार के कार्य–व्यवहार करता हुआ देखने को मिलता है। ऐसे कार्य–व्यवहार क्रम में ही चरित्र अपने–आप में स्पष्ट होता है। **मानवीयता पूर्ण चरित्र स्वधन, स्वनारी/स्वपुरुष दयापूर्ण कार्य–व्यवहार होना स्पष्ट किया जा चुका है।** दयापूर्ण कार्य–व्यवहार में ही तन, मन, धन का सदुपयोग होना मूल्यांकित होता है। दया की मूल प्रक्रिया ही है जीने देकर जीना। जागृत मानव जीने देकर जीने में प्रमाणित रहता ही है। इसका सहज चरितार्थता परिवार मानव के रूप में ही सम्पन्न हो पाता है। ऐसे परिवार मानव रूपी अधिकार, स्वत्व और स्वतंत्रता का स्रोत अस्तित्व मूलक मानव केंद्रित चिंतन ही है।....**(अध्याय: 7, पृष्ठ नंबर: 218–219)**

- न्याय सुरक्षा सम्बन्धी आंकलन :–
    1. ग्राम का प्रत्येक व्यक्ति अपनी योग्यता और पात्रता के अनुसार उत्पादन करता है या उत्पादन में भागीदार है या नहीं ? के रूप में उत्पादन न्याय का आंकलन।
    2. उत्पादित वस्तुओं का शोषण विहीन पद्धति से कहाँ तक विनिमय, आदान–प्रदान हो रहा है–के रूप में विनिमय न्याय का आंकलन।
    3. **स्वधन, स्वपुरूष/स्वनारी, दया पूर्ण कार्यों और तन, मन, धन रूपी अर्थ के सदुपयोग के आधार पर, आचरण–न्याय का आंकलन।....(अध्याय: 9, पृष्ठ नंबर: 259)**

- परिवार समूह व परिवार प्रतिनिधि के कर्तव्य एवं दायित्व :–
    1. परिवार प्रतिनिधि, सदस्यों के साथ व्यवहार, आचरण, स्वास्थ्य, उत्पादन व उत्पादन संबंधी साधनों के संदर्भ में स्वयं प्रमाणिक रहते हुए, उनके अनुरूप सभी सदस्यों को होने के लिए प्रेरणा स्त्रोत बने रहेंगे।
    2. परिवार प्रतिनिधि, परिवार के अन्य सदस्यों का मूल्यांकन करेंगे। परिवार प्रतिनिधि का मूल्यांकन, परिवार समूह सभा करेगा। **आचरण के लिए मूल्यांकन का आधार स्वधन, स्वनारी/स्वपुरूष व दया पूर्ण कार्य रहेगा।** व्यवहार के मूल्यांकन का आधार मानव व नैसर्गिक संबंधों व उनमें निहित मूल्यों की पहचान व निर्वाह से है। साथ ही तन,मन, धन रूपी अर्थ के सदुपयोग, सुरक्षा के आधार पर नैतिकता का मूल्यांकन किया जायेगा।... **(अध्याय: 9, पृष्ठ नंबर: 267)**
- रुचि मूलक आवश्यकताओं पर आधारित उत्पादन के स्थान पर मूल्य व लक्ष्य–मूलक अर्थात् उपयोगिता व प्रयोजनशीलता मूलक उत्पादन करने की शिक्षा प्रदान करना। जिससे प्रत्येक मानव में अधिक उत्पादन, कम उपभोग, असंग्रह, अभयता, सरलता, दया, स्नेह, **स्वधन,** स्वनारी/स्वपुरूष, बौद्धिक समाधान, प्राकृतिक सम्पत्ति का उसके उत्पादन के अनुपात में व्यय व उसके उत्पादन में सहायक सिद्ध हों। ऐसी मानसिकता का विकास करना, व्यवहार शिक्षा में समाविष्ट होगा। **(अध्याय: 9, पृष्ठ नंबर: 271)**
- 1.चरित्र में न्याय :–

स्वधन, स्वनारी/स्वपुरूष और दया पूर्ण कार्य का वर्तमान और उसका मूल्यांकन, चरित्र में न्याय का स्वरूप है। **स्वधन** का तात्पर्य श्रम नियोजन का प्रति फल, कला तकनीकी, विद्वत्ता विशेष प्रदर्शन, प्रकाशन किए जाने के फलस्वरूप प्राप्त पुरस्कार और उत्सवों के आधार पर किया गया आदान–प्रदान के रूप में प्राप्त, पारितोष रूप में प्राप्त धन या वस्तुएँ से है।... **(अध्याय: 9, पृष्ठ नंबर: 286)**

******

संदर्भ: मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान

(संस्करण: 2008)

- मानवीयता का स्वरूप – मानवीय आचरण है जो मूल्य, चरित्र, नैतिकता के रूप में प्रमाणित होता है। कार्य रूप में **स्वधन**, स्वनारी। स्वपुरूष, दया पूर्ण कार्य व्यवहार के रूप में देखा जाता है। यह मानवीयता पूर्ण चरित्र के रूप में प्रमाणित होता है। **(अध्याय: 3, पृष्ठ नंबर: 28)**
- रूप की सार्थकता सच्चरित्रता के रूप में, (अर्थात **स्वधन**, स्वनारी/स्वपुरुष, दया पूर्ण कार्य–व्यवहार के रूप) में होती है। **(अध्याय: 5.1, पृष्ठ नंबर: 87)**
- 'मानवीयतापूर्ण आचरण' मूल्य, चरित्र, और नैतिकता का संयुक्त रूप है। मूल्य, जागृत मानव सहज अभिव्यक्ति में जीवन मूल्य, मानव मूल्य, स्थापित मूल्य, शिष्ट मूल्य, मानव के संदर्भ में है। उपयोगिता मूल्य, कला मूल्य प्राकृतिक ऐश्वर्य पर निपुणता कुशलता पूर्ण श्रम नियोजन पूर्वक उपयोगिता मूल्य और कला मूल्य मूल्यांकित होता है। मूल्यों के आधार पर ही मानव लक्ष्य निर्धारित होता है। मानव लक्ष्य समाधान, समृद्धि, अभय, सह–अस्तित्व समझदारी और जागृति ही है। जिसमें से मानव मूल्य धीरता, वीरता, उदारता, दया, कृपा, करुणा है। धीरता अर्थात् न्याय के प्रति निष्ठा और दृढ़ता से है। "वीरता'' न्याय के प्रति निष्ठा रखते हुए, उसमें (दूसरों में भी) निष्ठा स्थापित करना है। वीरता को स्थापित करने में उसमें जितनी भी बाधाएं है, उसका निवारण करना है, यही वीरता का प्रमाण है। समझदारी सहित अनुभव बल, विचार शैली, जीने की कला ही धीरता, वीरता, उदारता, और दया, कृपा, करुणा का प्रमाण है। यही न्याय व समाधान सहित किया गया, सम्पूर्ण अर्पण–समर्पण भी है। दया अर्थात पात्रता के अनुरूप वस्तु को सुलभ करने की क्रिया–कलाप है। कृपा अर्थात वस्तु हो पात्रता न हो ऐसी स्थिति में पात्रता को स्थापित करने की क्रिया है। करुणा अर्थात वस्तु और पात्रता दोनों न हो, ऐसी स्थिति में उसे उपलब्ध कराने की सहज क्रिया है।

  चरित्र स्वधन, स्वनारी / स्वपुरुष तथा दया पूर्ण कार्य–व्यवहार विन्यास है।

  स्व–धन प्रतिफल, पारितोष, पुरस्कार के रूप में प्राप्त धन है। **(अध्याय: 5.21, पृष्ठ नंबर: 156)**

- न्याय सम्मत चयन, आस्वादन, विश्लेषण, इंद्रिय कार्यकलाप नियम नियंत्रण के रूप में स्वास्थ्य, वस्तुओं का आवश्यकता से अधिक उत्पादन, आवर्तनशील आर्थिक कार्य व्यवहार न्याय संगत होने के उपरान्त ही जागृति सहज विधि से समाधान समृद्धि सम्पन्न होता है। न्याय सम्मत आचरण (जो स्वधन, स्वनारी/स्वपुरुष, दया पूर्ण कार्य व्यवहार के रूप में है) तन–मन–धन रूपी अर्थ का सदुपयोग एवं सुरक्षा, सभी **सम्बन्धों** की पहचान एवं मूल्यों का निर्वाह ही मूल्य, चरित्र, नैतिकता रूपी आचरण वैभव है। यही सार्वभौम मानव है तथा स्वयं में व्यवस्था रूपी जागृत मनुष्य है। ऐसे जागृत मनुष्य ही समग्र व्यवस्था में भागीदार होते हैं। **(अध्याय: 5.21, पृष्ठ नंबर: 185)**

- स्वयं में विश्वास, श्रेष्ठता के प्रति सम्मान, जीवन–विद्या को विधिवत समझने से सार्थक हो जाता है। मानवीयता पूर्ण आचरण जो **स्वधन**, स्वनारी/स्वपुरूष तथा दया पूर्ण कार्य व्यवहार, तन–मन–धन रूपी अर्थ की सुरक्षा व सदुपयोग, सम्बन्धों की पहचान, मूल्यों का निर्वाह, की संयुक्त अभिव्यक्ति ही है। जिसे प्रत्येक व्यक्ति आचरण करना चाहता है। **(अध्याय: 5.31, पृष्ठ नंबर: 197)**

****

संदर्भ: मानवीय संविधान सूत्र व्याख्या

(संस्करण:प्रथम, मुद्रण:2007)

- मानवीयतापूर्ण आचरण जो **स्वधन**, स्वनारी/स्वपुरुष, दया पूर्ण कार्य व्यवहार, संबंधों की पहचान, मूल्यों का निर्वाह, मूल्याँकन स्वीकृति, उभयतृप्ति, तन–मन–धन रूपी अर्थ का सदुपयोग सुरक्षा के रूप में ही मानवीयता सहज व्याख्या है । यह मानव परंपरा में मौलिक विधान है । **(अध्याय:2, पृष्ठ नंबर: 9)**
- चरित्र

  1. **स्वधन**, स्वनारी–स्वपुरुष, दयापूर्ण कार्य–व्यवहार ।

  2. स्वयं में विश्वास चरितार्थतापूर्वक, श्रेष्ठता का सम्मान करने चरितार्थतापूर्वक, प्रतिभा में विश्वास चरितार्थतापूर्वक, प्रतिभा और व्यक्तित्व में संतुलन चरितार्थतापूर्वक, व्यवहार में सामाजिक रहते हुए व्यवसाय में स्वावलंबी रहने में चरितार्थतापूर्वक ।

  (प्रतिभा= ज्ञान, विवेक, विज्ञान

  व्यक्तित्व= मानवीयता, देव मानवीयता, दिव्य मानवीयता सहज रूप में।) **(अध्याय:2, पृष्ठ नंबर: 11)**

- मानवीय आचरण
  1. **स्वधन**, स्वनारी–स्वपुरुष, दयापूर्ण कार्य–व्यवहार विन्यास।
  2. संबंधों की पहचान, मूल्यों का निर्वाह मूल्यांकन एवं उभयतृप्ति ।
  3. तन, मन, धन रूपी अर्थ की सुरक्षा और सदुपयोग ।
  4. मूल्य, चरित्र, नैतिकता का अविभाज्य वर्तमान रूप में किया गया संपूर्ण कार्य, व्यवहार, विचार विन्यास । **(अध्याय:2, पृष्ठ नंबर: 17)**

- राष्ट्रीय चरित्र

धरती अपने में अखण्ड व धरती पर मानव जाति अखण्ड समाज रूप में मानव का उद्देश्य सुख रूप में मानव संस्कृति–सभ्यता, अखण्ड समाज में सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी जागृति सहज प्रमाण हो यह हर मानव में प्रमाणित होना ही अखण्ड मानव समाज होने के अर्थ में परम्परा प्रमाण है ।

स्पष्टीकरण – **मूल्य, चरित्र, नैतिकता के संयुक्त रूप में मानव जागृत होने का प्रमाण मानवीयता पूर्ण आचरण है,जिसमें स्वधन, स्व–नारी, स्व–पुरुष, दयापूर्ण कार्य व्यवहार, विचार व्यवस्था है।** राष्ट्रीयता अखण्ड समाज के अर्थ में , राज्य परिवार मूलक स्वराज्य वैभव के रूप में सार्वभौम है । मानव में, से, के लिए मूल्य चरित्र व नैतिकता पूर्वक संपूर्ण मूल्य स्पष्ट होता है । जब मौलिक रूप में मानव आचरण में स्पष्ट होता है तब मानवीय मूल्य, चरित्र, नैतिकता सहज रूप में पहचान होता है और तब नैतिकता, चरित्र व मूल्य प्रवृत्तियाँ स्पष्ट होना पाया जाता है। **(अध्याय:3, पृष्ठ नंबर: 28)**

- 4.6 (10) **मूल्यों सहज प्रमाण परम्परा**

सम्बन्धों में प्रयोजन के आधार पर पहचान, मूल्यों का निर्वाह, मूल्यांकन, उभय तृप्ति के रूप में ही न्याय सुलभ होना ही सुनिश्चित बिन्दु है।

चरित्र = स्वधन, स्वनारी–स्वपुरूष, दया पूर्ण कार्य व्यवहार करना–कराना–करने के लिए सहमत होना ।

नैतिकता = तन–मन–धन रूपी अर्थ का सदुपयोग और सुरक्षा करना ।

मानवीयता पूर्ण आचरण में मूल्य, चरित्र, नैतिकता अविभाज्य रूप से वर्तमान रहता है । यह जागृत मानव में ही प्रमाणित होता है।

हर नर–नारी में–से–के लिये मानवीयता पूर्ण आचरण स्वीकार होना स्वाभाविक है आवश्यक है। **(अध्याय:4, पृष्ठ नंबर: 42)**

- सामाजिक नियम

स्वधन, स्व–नारी, स्व–पुरुष, दयापूर्ण कार्य–व्यवहार का प्रमाण परंपरा। **(अध्याय:6, पृष्ठ नंबर: 89)**

- ....मानवीयता पूर्ण आचरण मूल्य, चरित्र, नैतिकता का संयुक्त रूप है –

मूल्य = जागृत मानव परस्परता में जीवन मूल्य, मानव मूल्य, स्थापित मूल्य, शिष्ट मूल्यों का वर्तमान व प्रमाण ।

चरित्र = **स्वधन**, स्वनारी–स्वपुरूष, दया पूर्ण कार्य व्यवहार ।

नैतिकता = तन–मन–धन रूपी अर्थ का सदुपयोग व सुरक्षा का वर्तमान ।

यह सभी व्यवस्था सहज सोपानों में मूल्यांकन का आधार है। साथ ही वस्तु मूल्य व कला मूल्य की उपयोगिता के आधार पर मूल्यांकन होना ही जागृत मानव परंपरा है। संबंधों का पहचान, मूल्यों का निर्वाह, मूल्याँकन, परस्परता में तृप्ति होता है। **(अध्याय:7, पृष्ठ नंबर:138)**

- निर्वाचित सदस्यों की अर्हता :–

  परिवार से लेकर ग्राम–सभा तक प्रत्येक निर्वाचित सदस्य की अर्हता निम्न होगी :–

  1. उसकी आयु कम से कम 18 वर्ष होगी ।
  2. वह ज्ञान–विवेक–विज्ञान में पारंगत व समाधान, समृद्धि पूर्वक जीता हुआ समझदार परिवार में, से, के लिए होगा। वह जीवन–विद्या से परिपूर्ण होगा अर्थात् स्वयं में विश्वास सम्पन्न और व्यवसाय में स्वावलंबी व व्यवहार में सामाजिक होगा ।
  3. मानवीय आचरण संबंधों का पहचान, मूल्यों का निर्वाह, मूल्यांकन, उभय तृप्ति, **स्वधन,** स्वनारी/स्व पुरुष, दया पूर्ण कार्य–व्यवहार विन्यास तन मन धन रुपी अर्थ का सदुपयोग सुरक्षा के रूप में वर्तमान में प्रकाशित प्रमाणित होगा। **(अध्याय:8, पृष्ठ नंबर: 164–165)**

- परिवार प्रधान, परिवार के अन्य सदस्यों का मूल्यांकन करेंगे। परिवार प्रधान का मूल्यांकन, परिवार समूह सभा करेगा । आचरण के लिए मूल्यांकन का आधार **स्वधन**, स्वनारी/स्वपुरुष व दया पूर्ण कार्य रहेगा।

  व्यवहार के मूल्यांकन का आधार मानव ए नैसर्गिक सम्बन्धों व उनमें निहित मूल्यों की पहचान व निर्वाह से है। **(अध्याय:8, पृष्ठ नंबर: 171)**

- रुचि मूलक आवश्यकताओं पर आधारित, उत्पादन के स्थान पर मूल्य व लक्ष्य–मूलक अर्थात उपयोगिता व प्रयोजनीयता मूलक उत्पादन करने की शिक्षा प्रदान करना। जिससे प्रत्येक मानव में आवश्यकता से अधिक उत्पादन समृद्धि (असंग्रह), अभयता, सरलता, दया, स्नेह, **स्वधन**, स्वनारी/स्वपुरुष, बौद्धिक समाधान, प्राकृतिक संपत्ति का उसके उत्पादन के अनुपात में व्यय व उसके उत्पादन में सहायक सिद्ध हो ऐसी मानसिकता का विकास करना, व्यवहार शिक्षा में समाविष्ट होगा।... **(अध्याय:8, पृष्ठ नंबर: 174–175)**

- आचरण में न्याय :–

स्वधन, स्वनारी/स्वपुरूष और दया पूर्ण कार्य का वर्तमान और उसका मूल्यांकन आचरण में न्याय का स्वरूप है। **स्वधन** का तात्पर्य श्रम नियोजन का प्रति फल, कला तकनीकी, विद्वत्ता विशेष प्रदर्शन, प्रकाशन किए जाने के फलस्वरूप प्राप्त पुरस्कार और उत्सवों के आधार पर किया गया आदान–प्रदान के रूप में प्राप्त पारितोष रूप में प्राप्त धन या वस्तुएँ से हैं । **(अध्याय:8, पृष्ठ नंबर: 178)**

- **स्वधन**, स्वपुरूष/स्वनारी, दया पूर्ण कार्यों और तन, मन, धन रूपी अर्थ के सदुपयोग के आधार पर संबंध, मूल्य, मूल्यांकन, उभय तृप्ति, आचरण–न्याय का आंकलन। (**अध्याय:10, पृष्ठ नंबर:** 223)
- समझदारी का वैभव सुख, समाधान, समृद्धि, परस्परता में विश्वास और नित्य उत्सव होता ही रहता है। इसके लिए समझदारी बौद्धिक प्रयोग, विवेकपूर्वक तथा समाधान, समृद्धि, अभय सह अस्तित्व प्रमाणित होने की विधि से सर्व मानव सुखी होते हैं। इसका प्रयोग न्याय व समाधानपूर्वक– सार्थक सुखी होते हैं। धन का प्रयोग उदारतापूर्वक करने से सार्थक सुखी होते हैं। बल का प्रयोग दया पूर्वक जीने देने व जीने के रूप में सार्थक होता है। **रूप के साथ सच्चरित्रता, यथा–स्वधन, स्वनारी, स्वपुरुष, दयापूर्वक किया गया कार्य–व्यवहार विचार से ही सार्थक सुखी होना होता है।** यह सर्व शुभ होने की विधि है जो लोक–शिक्षा और शिक्षा –संस्कार पूर्वक सार्थक होता है। (**अध्याय:12, पृष्ठ नंबर:** 267)

****

संदर्भ: जीवन विद्या – एक परिचय

(संस्करण: 2010: मुद्रण: 2017)

- मानवीयतापूर्ण आचरण में हर मानव अपने में **स्वधन**, स्वनारी/स्वपुरुष, दया पूर्ण कार्य व्यवहार के रूप में जी पाता है। इस तरह जीने से हमारे तन, मन, धन का सदुपयोग, सुरक्षा करना भी बनता है और जब ये दोनों सजते हैं तो उस स्थिति में संबंध, मूल्य, मूल्यांकन, उभयतृप्ति भी अपने आपसे प्रमाणित होता है। इस ढंग से मूल्य, चरित्र, नैतिकता के संयुक्त रूप में मानव का आचरण व्याख्यायित होता है। तन, मन, धन रूपी अर्थ का सदुपयोग सुरक्षा होना ही नैतिकता है। **(अध्याय:2, पृष्ठ नंबर: 37)**
- व्यवस्था में जीने से चरित्र की बात आएगी। चरित्र को **स्वधन**, स्वनारी, स्वपुरुष, दयापूर्ण कार्य व्यवहार के रूप में पहचाना गया है। नैतिकता (तन, मन, धन रूपी सदुपयोग और सुरक्षा) से अभयता बनती है। इस प्रकार से मानवीयता पूर्ण आचरण है। इसमें बहुत अच्छे ढंग से मानव आश्वस्तता पूर्वक जी सकता है। **(अध्याय:3, पृष्ठ नंबर: 79)**
- शुभ प्रवृत्ति की ओर रास्ता न होने से अशुभ प्रवृत्ति की ओर दौड़ता है। शुभ की ओर दौड़ने का प्रस्ताव है उसे जाँचने की जरूरत है, रास्ता पहचानने की आवश्यकता है।

  पहला– मानवीय चरित्र एक ही होता है चाहे आदमी कैसा भी हो। मानवीय चरित्र का स्वरूप– **स्वधन**, स्वनारी/स्वपुरुष, दयापूर्ण कार्य व्यवहार के रूप में होता है। **(अध्याय:4, पृष्ठ नंबर: 89)**
- मानवीयतापूर्ण आचरण समझ में आ गया तो परंपरा बन गया। परंपरा के लिए मानव मानवीय व्यवहार को, मानवीयता पूर्ण आचरण को समझे बिना मानव परंपरा होने वाला नहीं है। मानवीय आचरण ही एक ऐसा वस्तु है जो कि सर्व देश– काल में एक सा ही है। मूल्य, चरित्र, नैतिकता का संयुक्त स्वरूप आचरण है। चरित्र को बताया **स्वधन**, स्वनारी/ स्वपुरुष तथा दयापूर्ण कार्य व्यवहार।... **(अध्याय:4, पृष्ठ नंबर: 117)**

संदर्भ: विकल्प एवं अध्ययन बिन्दु

(**संस्करण**:2011,**मुद्रण**: 2016)

- मानवीयतापूर्ण आचरण– ○**स्वधन**, स्वनारी, स्वपुरुष दयापूर्ण कार्य व्यवहार

  ○ संबंध मूल्य मूल्यांकन उभय तृप्ति

  ○ तन मन धन रुपी अर्थ का सदुपयोग सुरक्षा (**अध्याय**:, **पृष्ठ नंबर**: 8)

- मानव अपने मानवत्व सहित व्यवस्था, समग्र व्यवस्था में भागीदारी होना।

  मानवीयता पूर्ण आचरण

  (अ) मूल्य = 30 मूल्य।

  (ब) चरित्र = **स्वधन**,स्वनारी/स्वपुरुष, दयापुरुष कार्य–व्यवहार।

  (स) नैतिकता = धर्मनीति, राज्य नीति।

  विवेक– जीवन का अमरत्व, शरीर का नश्वरत्व, व्यवहार के नियमों का बोध। लक्ष्य स्पष्ट होना। (सामाजिक, बौद्धिक, प्राकृतिक)।

  विज्ञान– कालवादी , क्रियावादी, निर्णयवादी ज्ञान। लक्ष्य के लिए दिशा निर्धारण। (**अध्याय**:, **पृष्ठ नंबर**: 20)

- व्यवहारवाद :– संबंध, मूल्य, मूल्यांकन, उभयतृप्ति, **स्वधन** स्वनारी–स्वपुरूष दयापूर्ण कार्य व्यवहार तन–मन–धन रुपी अर्थ का सदुपयोग सुरक्षा संबंधी तर्क प्रयोजन सहित क्रियान्वयन के लिए आवश्यक अध्ययन और वार्तालाप।

  (**अध्याय**:, **पृष्ठ नंबर**: 45)

संदर्भ: मानवीय आचरण सूत्र

(**संस्करण: प्रथम, मुद्रण: 2003**)

- 3.46 जागृत मानव ही **स्व–धन**, स्व–नारी/स्व–पुरुष, दया पूर्ण कार्य–व्यवहार में प्रवृत्त और प्रमाणित होता है। यही मानवीय चरित्र का वैभव है। (**अध्याय: 3, पृष्ठ नंबर: 22**)
- 7.9 समझदारी का वैभव सुख, समाधान, समृद्धि, परस्परता में विश्वास और नित्य उत्सव होता ही रहता है। इसके लिए समझदारी, बौद्धिक प्रयोग, विवेकपूर्वक तथा समाधान, समृद्धि, अभय, सह अस्तित्व प्रमाणित होने की विधि से सर्व मानव सुखी होते हैं। इसका प्रयोग न्याय व समाधानपूर्वक–सार्थक सुखी होना पाया जाता है। धन का प्रयोग उदारतापूर्वक करने से सार्थक सुखी होते हैं। बल का प्रयोग दया के साथ जीने देने के रूप में सार्थक होता है। रूप के साथ सच्चरित्रता, यथा – **स्व–धन**, स्व–नारी, स्व–पुरुष, दयापूर्वक कार्य–व्यवहार विचार से ही सार्थक सुखी होना होता है। यह सर्व शुभ होने की विधि है जो लोक–शिक्षा और शिक्षा–संस्कार पूर्वक सार्थक होता है। (**अध्याय: 7, पृष्ठ नंबर: 48**)
- 13.61 सामाजिक नियम ही **स्व–धन**, स्वनारी, स्व–पुरुष दयापूर्ण कार्य व्यवहार है। (**अध्याय: 13, पृष्ठ नंबर: 81**)
- 14.5 आचरण :– **स्व–धन**, स्वनारी, स्वपुरुष, दया पूर्ण कार्य व्यवहार, सम्बन्धों की पहचान, मूल्यों का निर्वाह व मूल्यांकन, उभय तृप्ति, तन–मन–धन रूपी अर्थ का सदुपयोग व सुरक्षा मानवत्व है। (**अध्याय: 14, पृष्ठ नंबर: 85**)

****

संदर्भ: संवाद भाग १

(संस्करण: प्रथम, मुद्रण: 2011)

- इसके बाद आता है चरित्र। चरित्र के बारे में मैंने यह देखा है **स्वधन,** स्वनारी/ स्वपुरुष और दयापूर्ण कार्य व्यवहार करने से ही मानव चरित्र है। मूल्य है परिवार में जीने के लिए। चरित्र है समाज में जीने के लिए। नैतिकता राज्य (व्यवस्था) में जीने के लिए है। **(अध्याय:, पृष्ठ नंबर:** 163)
- चरित्र रूप में मानवीयतापूर्ण आचरण **स्वधन**, स्वनारी और दयापूर्ण कार्य व्यवहार यह मानव चेतना विधि से ही प्रमाणित होना पाया जाता है। **(अध्याय:, पृष्ठ नंबर:** 209)
- मानवीयतापूर्ण आचरण को मैं पाया। मैं स्वयं मानवीयतापूर्ण आचरण को करता हूँ। उसमें मूल्य, चरित्र और नैतिकता ये तीन भाग समाये है। उसमें "चरित्र" का जो भाग है उससे शरीर को सुख रूप में पहचानने की विधि बनती है। **वह स्वधन, स्वनारी/ स्वपुरुष और दयापूर्ण कार्य व्यवहार**। इससे शरीर से सुख पाने का स्त्रोत बना है। कहीं भी इसको कोई भी आदमी आजमा ले, शोध कर ले और परीक्षण कर ले। मानव शरीर और जीवन के संयुक्त रूप में ही जीवित दिखता है। यदि जीवन भाग जाता है तो मानव संज्ञा नहीं रहता। इस आधार पर शरीर के स्वरूप में जो रूप है उससे सुख मिलने की विधि यही है सद चरित्रता के साथ सुख। **(अध्याय:, पृष्ठ नंबर:** 221)
- कुल मिलाकर "सामान्य मानव" के लिए न तो "तप" सुलभ हुआ ना ही संवेदनाओं को सदा राजी रखना सुलभ हुआ। सब लोगों को "विरक्ति" मिल नहीं सकती, न सब लोगों से संवेदनाओं की पूजा पाठ हो सकती है। सारा मानव का रोना गाना, तलवार चलाना और फूल– माला चढ़ाना इस बात को लेकर है। इस बात में हम को ध्यान देने की जरूरत है। यह दोनों भाग "अतिवाद" में गिरफ्त हो गया यही इनकी समीक्षा है। अब क्या किया जाए? सब को मिलने वाली क्या चीज हो सकता है? इस बात पर सोचा जाए! यह सोचने पर पता चला "समाधान, समृद्धि पूर्वक हर व्यक्ति जी सकता है। हर परिवार जी सकता है। हर व्यक्ति शरीर के साथ जुड़ा है। शरीर के साथ संवेदनाएं जुड़ी है। संवेदनाओं के साथ सुखी होने की विधि है सदचरित्रता। **स्वधन, स्वनारी/स्वपुरुष, दया पूर्ण कार्य व्यवहार विधि से हमको ज्ञान के साथ संवेदनाओं से मिलने वाला सुख मिलता है। (अध्याय:, पृष्ठ नंबर:** 222)

संदर्भ: संवाद भाग २

(संस्करण:2013)

- सुविधा संग्रह "पर धन" के बिना हो ही नहीं सकता। "पर धन" चरित्र से मानवीयतापूर्ण आचरण कैसे जुड़ सकता है? इस परसोचा जाए। समाधान, समृद्धि, **"स्वधन"** के साथ ही होता है। स्वधन चरित्र से ही मानवीयतापूर्ण आचरण जुड़ सकता है। **(अध्याय:1– 1.2, पृष्ठ नंबर: 49)**
- **चरित्र: स्वधन,** स्वनारी/ स्वापुरुष और दया पूर्ण कार्य व्यवहार यह मानवीयतापूर्ण चरित्र है। चरित्रता पूर्वक जीना मानवीयतापूर्ण आचरण का दूसरा आयाम है। **(अध्याय:1–1.2, पृष्ठ नंबर: 52)**